

ADVERTISEMENT



"स्त्री को सताकर कोई पुरुष सुखी नहीं रह सकता" महिलाओं की स्थिति और मदरहुड जैसे मुद्दों पर आचार्य प्रशांत से खास बातचीत

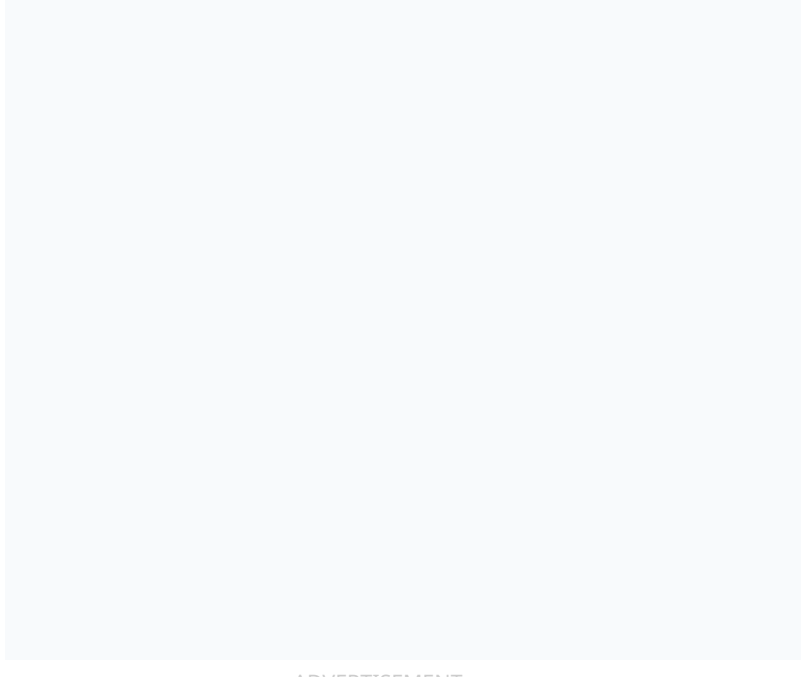
हाल ही में आचार्य प्रशांत, जागरण मंथन का हिस्सा बने। यहां उन्होंने राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका, मदरहुड, समाज में महिलाओं की स्थिति और करियर से जुड़े कई मुद्दों पर खुलकर बात की।



Deepika Bhatnagar
Updated: 2024-07-19, 18:13 IST



मनु स्मृति का एक श्लोक है "यत्र नर्यस्तु पूज्यन्ते रमंते तत्र देवता, यत्रितास्तु न पूज्यन्ते सर्वस्तत्रफलाः क्रियाः।" यानी जहां नारियों की पूजा होती है, वहां देवताओं का निवास होता है और जहां नारियों का अनादर होता है, वहां सारे काम निष्फल होते हैं। हमारी संस्कृति में हमेशा से महिलाओं को पूजनीय माना गया है। भले ही आज भी समाज के कई हिस्सों में महिलाएं भेदभाव का शिकार हैं। लेकिन, सच यह भी है कि महिलाएं समाज की नींव रखने में एक अहम भूमिका निभाती हैं और उनके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। आचार्य प्रशांत का भी यही मानना है। जी हां, हाल ही में इंडियन फिलॉस्फर और ऑथर आचार्य प्रशांत, जागरण मंथन का हिस्सा बने। यहां उन्होंने राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका, मदरहुड, समाज में महिलाओं की स्थिति और करियर से जुड़े कई मुद्दों पर खुलकर बात की। चलिए, आपको बताते हैं पॉलिटिकल एडिटर स्मृति रस्तोगी के साथ आचार्य प्रशांत की बातचीत के खास अंश।



ADVERTISEMENT

आचार्य प्रशांत वे महिलाओं के बारे में कही एक खास बात

आचार्य प्रशांत ने बातचीत में ही महिलाओं की भूमिका को लेकर एक बड़ी बात कही। उन्होंने साफ शब्दों में कहा, "स्त्री को सताकर कोई पुरुष सुखी नहीं रह सकता।" उनका मानना है कि राष्ट्र निर्माण में महिलाओं को अहम भूमिका है और उन्हें उनका दर्जा और सम्मान मिलना ही चाहिए। महिलाओं के सुसाइड के आंकड़ों और महिलाएं के स्टूडगल पर भी यह बातचीत आगे बढ़ी।

मैटरनिटी लीव पर कही यह बात

महिलाएं मैटरनिटी लीव के बाद ऑफिस आने और अपने करियर से जुड़े कई चैलेंजेस फेस करती हैं। मसलन अगर महिलाएं दो साल का ब्रेक लेती हैं, तो उसके बाद वापिस काम पर लौटने और उसी ओहदे को हासिल करने में उन्हें मुश्किल आती है। इस बारे में आचार्य का कहना है कि मां का अहम रोल बच्चों को सिखाने और उसके जीवन को बनाने में होता है। अक्सर लोगों को लगता है कि अगर मां कामकाज छोड़कर घर पर बैठ जाएगी, तो शायद वह बच्चे का अच्छे से पालन-पोषण कर पाएगी। लेकिन, ऐसा नहीं है। असल में अगर मां ही खुद आश्रित हो जाएगी, दुनिया में निकलना और चीजों को जानना छोड़ देगी, तो फिर वह बच्चे को क्या सिखा पाएगी? ऐसे में मां के लिए काम और बच्चे के प्रति प्रेम को साथ लेकर चलना जरूरी है और इसके लिए पहले से प्लानिंग करनी होगी। इस समीकरण को बैठाने में बच्चे के पिता और जहां महिला नौकरी कर रही है, उनकी भी अहम भूमिका रहेगी। महिलाओं को वर्क फ्रॉम होम ऑप्शन्स दिए जा सकते हैं।

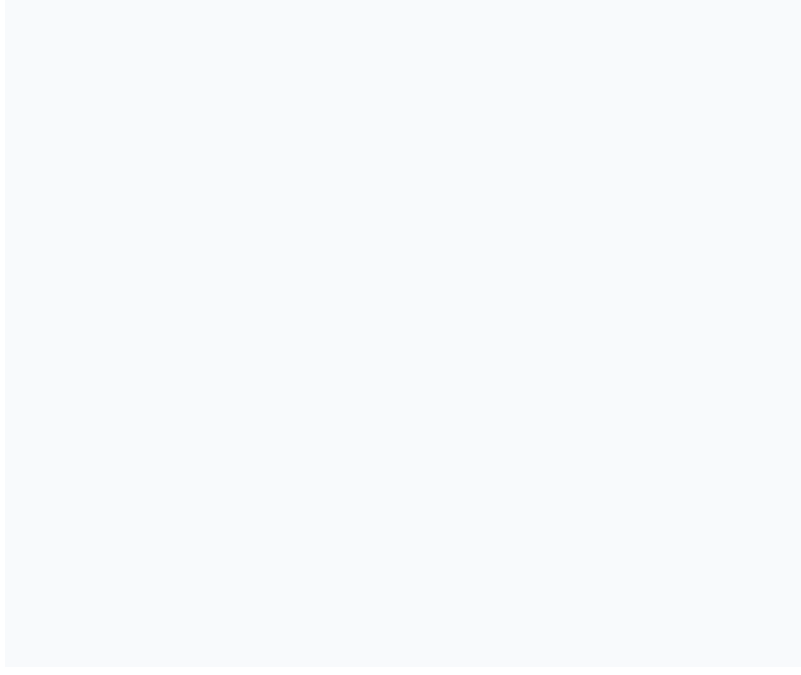
वर्कप्लेस पर बच्चे की देखभाल के इंतजाम पर दिया जोर

आचार्य ने बातचीत के दौरान इस बात का भी जिक्र किया कि महिलाएं काम में अपना शत प्रतिशत देती हैं। वे पूरे मन और लगन से काम करती हैं। ऐसे में जिस कम्पनी में वे काम कर रही हैं, उनका भी फर्ज है कि वे उन्हें मातृत्व की जिम्मेदारी निभाने का समय दें। मैटरनिटी लीव के बाद कुछ वक्त वे घर से काम कर सकें और इसे अलावा, वर्कप्लेस पर बच्चों को लेकर आ पाना और उनकी देखभाल के लिए इंतजार होना भी एक सराहनीय कदम हो सकता है।



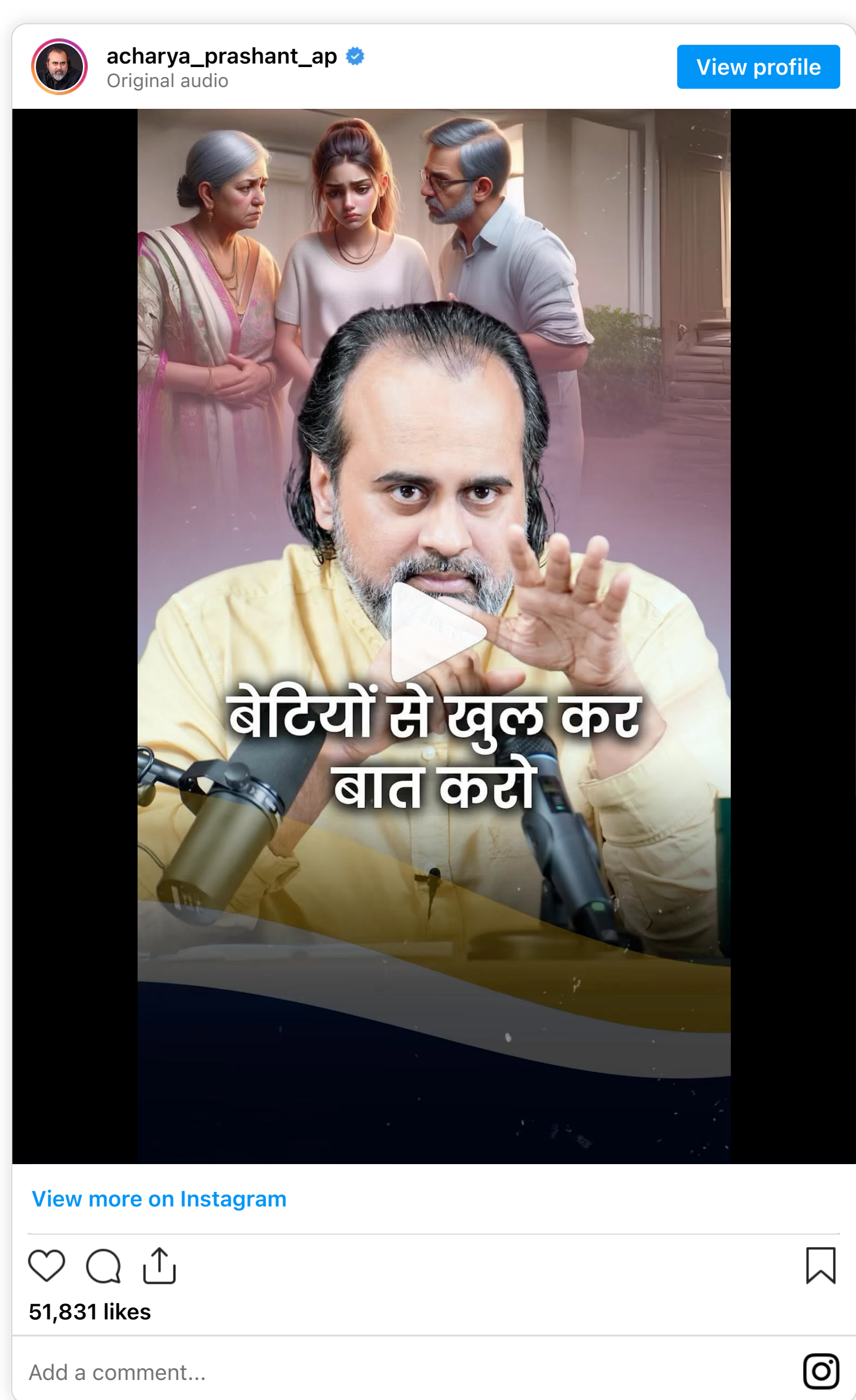
महिलाओं को है शिक्षा का समाव अधिकार

स्मृति ने 2021 के आंकड़ों के आधार पर महिलाओं के सुसाइड के मुद्दे को उठाया। उन्होंने बताया कि 2021 में 10,000 किसानों ने सुसाइड किया। वही, 45,000 से अधिक महिलाओं ने सुसाइड किया। आचार्य ने इस बारे में कहा कि अक्सर पुरुषों को अगर घर में टॉक्सिक वातावरण लगता है, तो वे घर छोड़ देते हैं। लेकिन, महिलाएं घर सिर्फ तब छोड़ती हैं जब उनकी शादी हो जाती है या वे कहीं गायब हो जाएं। कई महिलाएं अपने पति के घर में सुसाइड करती हैं। उन्होंने कहा कि सबसे अजीब बात ये है कि इन आंकड़ों को देखकर भी हम आंखें मूंद लेते हैं और इन्हें नजरअंदाज करते रहते हैं। उन्होंने कहा जैसे किसी भी पुरुष के लिए पोषण, शिक्षा और आध्यात्म जरूरी है। ठीक वैसे ही लड़कियों के लिए भी है। इसमें कुछ अलग से समझने जैसा या अनोखा नहीं है। उन्होंने कहा कि इसमें नारीवाद जैसा कुछ नहीं है, **महिलाओं को समान हक** मिलने चाहिए और जब ऐसा होने लगेगा तो हमें अपने आप बदलाव दिखेगा।



ADVERTISEMENT

राष्ट्र के विकास के लिए जरूरी है महिलाओं का आगे बढ़ना



आचार्य ने महिलाओं के आगे बढ़ने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आज हम चीन से मुकाबला कर रहे हैं, अर्थव्यवस्था के मामले में चीन की बराबरी करना चाहते हैं, लेकिन ये हमारे लिए बहुत मुश्किल है क्योंकि चीन में 60 प्रतिशत से ज्यादा महिलाएं काम कर रही हैं, जिंदगी अपनी शतों पर जी रही हैं। वहीं, हमारे देश में सिर्फ 30 प्रतिशत से भी कम महिलाएं काम कर रही हैं। ऐसे में हम कैसे चीन का मुकाबला कर पाएंगे। किसी भी राष्ट्र को बड़ा बनने और आगे आने के लिए महिलाओं का काम करना बहुत जरूरी है।

महिलाओं को काम को देनी होगी प्राथमिकता

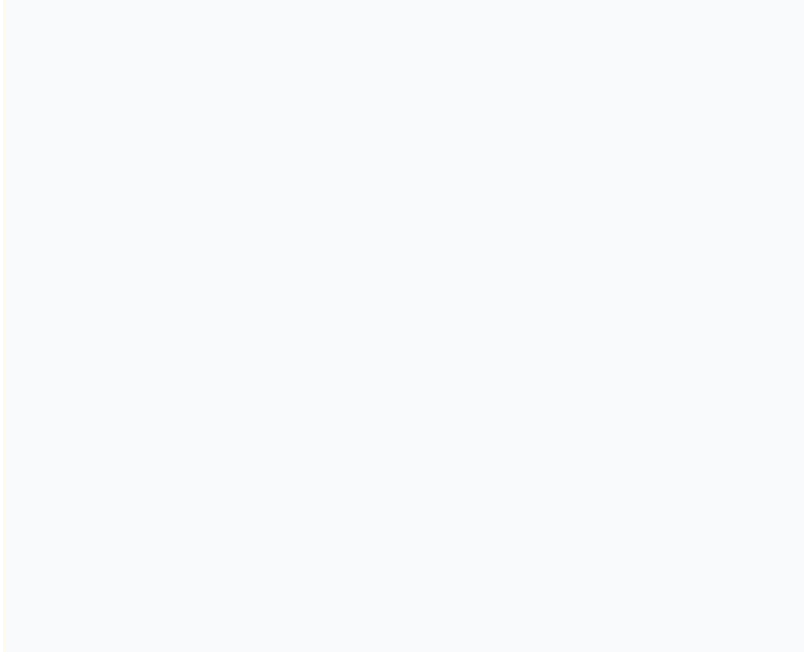
आचार्य का मानना है कि आज भी कई जगहों पर यहां तक कि अच्छी पढ़ी-लिखी महिलाओं के बीच भी यह सोच बनी हुई है कि महिलाएं नौकरी तभी करती हैं, जब उनका पति घर को चलाने में सक्षम नहीं होता है यानी अगर घर में पैसे की कमी है, तो महिला नौकरी करेगी वरना नहीं करेगी। असल में महिलाओं को इस सोच को बदलन चाहिए। इसी सोच की वजह से काफी सारी कम्पनीज भी महिलाओं को बड़े रोल नहीं दे पाती हैं। असल में काम करना या अपनी पहचान बनाना, महिलाओं की सोच में होना चाहिए।

यह भी पढ़ें- [Inspiring Indian Women 2023: इस साल की इन 10 सफल महिलाओं के बारे में हर भारतीय को जानना चाहिए](#)

आप इस बारे में क्या सोचते हैं, हमें कमेंट बॉक्स में लिख कर बताएं। अगर आपको यह स्टोरी अच्छी लगी है, तो इसे शेयर जरूर करें। ऐसी ही अन्य स्टोरी पढ़ने के लिए जुड़ी रहें हरजिंदगी से।

यह भी पढ़ें- [Mothers Day Special: मां हो या अनुपमा... आखिर क्यों सिर्फ खाना बनाने पर ही दिखता है मम्मी का प्र्यार?](#)

आपकी राय हमारे लिए महत्वपूर्ण है! हमारे इस रीडर सर्वे को भरने के लिए थोड़ा समय जरूर निकालें। इससे हमें आपकी प्राथमिकताओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलेगी। यहां क्लिक करें।



ADVERTISEMENT

MORE FOR YOU

-
- क्या 67 साल की उम्र में टोपी के 'एकिमात' को है अपनी टुकल का इंतजार? शादी को लेकर मुकेश खन्ना का बयान हुआ थाक्सल
-
- 'अगर बच्चा नहीं हुआ तो...' 41 साल की आरती सिंह ने प्रेगनेसी पर की खुलकर बात, पहली मुलाकात में ही पति से क्यों क्रिया था बच्चे ...
-
- Aaj Ka Vrishchik Rashifal 02 April 2026: मन में रहेगी शांति और एफान की चाह, खर्चों पर रहेगा नियंत्रण और भविष्य की हो...
-
- Aaj Ka Makar Rashifal 09 April 2026: आज अपनी अंतरात्मा की आवाज सुना होगा फावरेटमेंड, जानिए मकर राशि की...